आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 1/अंक 2/दिसंबर 2021

Received: 12\11\2021; Published: 24\12\2021

कविताएं

डा. संगीता श्रीवास्तव सहर, विस्मृति, भाग रहा है आदमी,आखर हिंदी पत्रिका, खंड 1/अंक 2/दिसंबर 2021,(181-182)

विस्मृति

मत कुरेदो
अपने तेज तीखे नुकीले नाखूनों से अतीत चुलबुला नटखट अतीत
चंचल आत्मीय अतीत
वातायन खोल दो
भरने दो सुरभित मलयांचल गंध
हो जाने दो दिशा दिशा को
सुगंधित, पुष्पित, पल्लवी
अमृत वर्षा की मीठी बूंदों का स्वाद चखने दो
फैलने दो इंद्रधनुषी सप्त रंग
जीवन के कैनवास पर
एक कोना राग का भी
मधुरिमा होने दो
स्पंदित होने दो धड़कनों को मत रोको संवेदित होने दो रग-रग में मानवीय गुण
अनुभूति होने दो
झरनों के कल - कल में
आनंदित होने दो
बिना विस्मृत किए स्मृतियों को ।।

डा. संगीता श्रीवास्तव सहर
वाराणसी
Mo 8887942025

****

भाग रहा है आदमी

भाग रहा है आदमी
ना जाने क्या बात है
आज आदमी से भाग रहा है आदमी
ना जाने क्या मूल मंत्र है
देखने सुनने में मामूली सा दिखता
आईने के सामने सच बोलता
भाग रहा है आदमी
पथराई आहटें दम तोड़ती
जंगल की आग की तरह
तीव्रता से जल्दी संवेदनाएं
टूटते रिश्ते
पर न जाने क्या खोजते
भाग रहा है आदमी
अपने चारों ओर
किस मद तले दबे
मृग मरीचिका की तलाश में
इधर उधर
भाग रहा है आदमी ।।

डा. संगीता श्रीवास्तव सहर
वाराणसी
Mo 8887942025

****